डॉ. पद्मा पाटील
एम्.ए., एम्. फिल, पीएच्. डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

संस्तुति

मैं संस्तुति करती हूँ कि **श्री. नवनाथ सदू पाटील** का एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत " **'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित दलित समाज का यथार्थ**" लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

(डॉ. पद्मा पाटील)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

स्थान : कोल्हापुर
तिथि : 16/03/2009

डॉ. प्रकाश भाऊसो मोकाशी
एम्.ए., एम्. फिल, पीएच्. डी.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, इस्लामपुर।
तथा
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री. नवनाथ सदू पाटील** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए '' **'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित दलित समाज का यथार्थ**'' लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोध-निर्देशक

डॉ. प्रकाश भाऊसो मोकाशी

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 16-03-09

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि '' **'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित दलित समाज का यथार्थ**'' लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोध-छात्र

(श्री. नवनाथ सदू पाटील)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 16-03-09

प्राक्कथन

प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय-चयन -

साहित्य में समाज जीवन का प्रतिबिंब होता है। भूत, भविष्य और वर्तमान की ओर प्रेरित करने का कार्य साहित्य करता है। मानव जीवन की गतिविधियाँ और उसके विकास एवं क्रिया-व्यापारों का अंकन साहित्य में होता है। साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा मानव जीवन के अत्यंत निकटस्थ है। अतः यह जीवनाभिमुख साहित्य विधा है।

स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् लेखक जगदीशचंद्र का 'धरती धन न अपना' उपन्यास मेरे पढ़ने में आया। लेखक जगदीशचंद्र स्वयं उच्चवर्गीय होते हुए भी उनके साहित्य में दलित समाज के यथार्थ चित्रण ने मुझे झकझोर दिया। प्रेमचंद के पश्चात् दलित समाज के यथार्थ चित्रण में शायद ही किसी दूसरे रचनाकार को सफलता मिली होगी जो लेखक जगदीशचंद्र को प्रस्तुत उपन्यास से मिली है। अतः मैंने एम्. फिल. लघु शोध-प्रबंध के लिए प्रगतिशील रचनाकार जगदीशचंद्र का 'धरती धन न अपना' उपन्यास चुना। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित दलित समाज ने मुझे आकृष्ठ किया। एक सशक्त उपन्यासकार के रूप में जगदीशचंद्र का स्थान महत्त्वपूर्ण है।

जगदीशंचद्र के उपन्यासों का अध्ययन करते समय मेरे ध्यान में आया कि उन्होंने विविध विषयों पर लेखन किया है। विभिन्न अछूते विषयों को उन्होंने समाज के सामने उजागर करने का प्रयास किया। लेखक जगदीशचंद्र के उपन्यासों ने मुझे प्रभावित किया और अनुसंधान के लिए उनके उपन्यास पर कार्य करने का मैंने संकल्प किया। श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. प्रकाश मोकाशी जी से शोध-विषय के संदर्भ में विचार-विमर्श किया और आपके सुझावों के अनुसार लघु शोध-प्रबंध के लिए " 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित दलित समाज का यथार्थ" विषय का चयन किया।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए थे-

1. लेखक जगदीशचंद्र की साहित्यिक पहचान क्या है ?